कालसर्पहर
श्री पार्श्वनाथ विधान

संकलन एवं रचना

गणिनीप्रमुख आर्यिका ज्ञानमती

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 485
ISBN-978-93-84003-95-1

कालसर्पहर श्री पार्श्वनाथ विधान

(कलिकुंड पार्श्वनाथ पूजा सहित)

–संकलन एवं रचना –

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

ऋषभगिरि-मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में विराजमान 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव मूर्ति निर्माण की प्रेरणास्रोत दिव्यशक्ति चारित्रचन्द्रिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के 61 वें आर्यिका दीक्षा दिवस-वैशाख वदी दूज (24 अप्रैल 2016) के पावन अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com
Website : www.jambudweep.org , www.encyclopediaofjainism.com
Facebook : divyashaktigyanmatimataji

COURTESY – JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2542, वैशाख वदी दूज	मूल्य
1100 प्रतियाँ	24 अप्रैल 2016	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में सभी मनुष्यों का जीवन मंगलमयी हो, इसके लिए देवदर्शन, भगवान का अभिषेक, पूजन, भगवान की भक्ति, मण्डल विधानों का आयोजन मंगल साधन हैं। जिनेन्द्र देव की भक्ति, स्तुति कर्मनिर्जरा में विशेष कारण है। भक्त भगवान की भक्ति करते-करते एक दिन स्वयं भगवान बन जाता है। पूज्य माताजी हमेशा अपने प्रवचनों में कहती हैं प्रत्येक प्राणी की आत्मा भगवान आत्मा है। जैसे दूध में घी विद्यमान है वैसे ही प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम को पाकर, पूरे विश्व में ज्ञान का अलख जगाने वाली पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य क्षेत्र में एक कीर्तिमान स्थापित किया है।

वर्तमान समय में देखते हैं कि जब हर संसारी प्राणी दिन-रात अपने सांसारिक सुख साधनों को प्राप्त करने के लिय तन-मन से पूर्णरूपेण धनवृद्धि के लिये प्रयासरत रहता है। वहाँ उनके पास कुछ समय भी धर्म कार्यों के लिये शेष नहीं है। हर समय भोगोपभोग की सामग्री को एकत्र करने में ही उनका ध्यान रहता है। कई जन्मों के पुण्य उदय से ही मनुष्य का जिनधर्म एवं जिनवाणी के प्रति अनुराग उत्पन्न होता है। जीव के शुभ-अशुभ भाव ही उसे तदनुसार फल देने वाले होते हैं। श्रावकों के लिये षट् आवश्यक कर्तव्यों में देवपूजा, स्वाध्याय आदि भी कहे गये हैं। जिनमें अनेक पूजा-विधानों को करके भगवान की भक्ति करने का अवसर मिल जाता है और फिर गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा लिखी पूजाओं को करने से तो "एक पंथ दो काज" वाली सूक्ति चरितार्थ हो जाती है यानि भक्ति के साथ-साथ स्वाध्याय भी हो जाता है। अनेक छोटे-बड़े विधान पू. माताजी की लेखनी से प्रसूत हो चुके हैं और निरंतर यह क्रम जारी है। उसी क्रम में **"कालसर्पहर श्री पार्श्वनाथ विधान"** नामक यह पुस्तक भी ग्रंथमाला के माध्यम से प्रकाशित होकर आप तक पहुँच रही है। यह विधान आप सबके लिये मंगल प्रदान करने वाला हो, यही मंगल भावना है।

प्रस्तावना

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जो कल्याण कल्पतरु सार-भूत चिंतामणि चिंतितदा।
श्री पारस प्रभु पादकमल को, भक्ति भाव से नमूँ मुदा।।

जैनधर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जीवन एक विशेष इतिहास को लिए हुए है। भव संकटहर्ता भगवान पार्श्वनाथ, विघ्नों के संहारक पार्श्वनाथ, क्षमाशील पार्श्वनाथ, कालसर्पहर पार्श्वनाथ आदि अनेक नामों से भगवान पार्श्वनाथ को जाना जाता है। वर्तमान में सबसे ज्यादा भगवान पार्श्वनाथ के मन्दिर एवं मूर्तियाँ सर्वत्र हैं।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी दिव्यशक्ति चारित्रचन्द्रिका परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 24 तीर्थंकरों की भक्ति में 24 तीर्थंकरों के पृथक्-पृथक् विधानों की रचना की है। वर्तमान में संसारी प्राणियों के जीवन में कालसर्पयोग दोष को दूर करने हेतु यह **'कालसर्पहर श्री पार्श्वनाथ विधान'** की भी रचना कर दी है।

इस विधान में सर्वप्रथम मंगलाचरण करते हुए श्री पार्श्वनाथ का स्तोत्र है जिसमें भगवान पार्श्वनाथ का पूरा जीवन परिचय गागर में सागर के समान समाहित है। भगवान के ऊपर दस भव तक कमठ के जीव ने उपसर्ग किया लेकिन भगवान ने उसका प्रतीकार न करके हरभव में क्षमाभाव को धारण किया, तभी वे उपसर्गों को सहनकर भगवान पार्श्वनाथ बन गए। पूज्य माताजी ने इन भावों को कितने सुन्दर शब्दों में संजोया है–

निष्कारण ही कमठासुर ने, दशभव तक वैर निकाला था।
प्रभु को दुख दे देकर उसने, खुद को दुर्गति में डाला था।।
प्रभु महासहिष्णु क्षमा सिन्धु, भव-भव से सहते आये हैं।
तन से ममता को छोड़ दिया, नहिं किंचित् भी घबराये हैं।।

स्तोत्र के बाद में संस्कृत में श्री कलिकुंड पार्श्वनाथ भगवान की पूजा है। जो कि सभी प्रकार के दुष्ट ग्रहों को दूर करने में समर्थ है।

सिद्धं विशुद्धं महिमानवेशं। दुष्टारिमारि ग्रहदोषनाशं।
सर्वेषु योगेषु परं प्रधानं। संस्थापये श्रीकलिकुंडयंत्रं।।

इसके बाद में पूज्य माताजी द्वारा रचित सुन्दर तर्जों में पार्श्वनाथ भगवान की पूजा एवं पंचकल्याणक के अर्घ्य हैं। पुनः भगवान के 1008 नाम मंत्रों में से महाशोकध्वजाय, अशोकाय आदि 108 नाम मंत्रों सहित अर्घ्य हैं। जैसे–

महाशोकध्वज नाम, महाशोक तरु चिन्ह है।
करूँ अनंत प्रणाम, शोक हरो हे पार्श्व जिन!।।1।।

108 अर्घ्य के बाद जाप्यमंत्र एवं जयमाला है। जयमाला में पूज्य माताजी ने लिखा है जिस समय भगवान पार्श्वनाथ के ऊपर कमठासुर ने उपसर्ग किया उस समय धरणेन्द्र पद्मावती ने फण फैलाकर भगवान की खूब भक्ति की और तभी भगवान को केवलज्ञान हो गया, समवसरण की रचना बन गई। तब उस कमठासुर ने भी वैर का त्याग कर सम्यक्त्व को धारण किया।

भगवान के समवसरण में स्वयंभू आदि दश गणधर, सोलह हजार मुनि, गणिनी सुलोचना आर्यिका सहित 36 हजार आर्यिकाएं, 1 लाख श्रावक एवं 3 लाख श्रावक थे। भगवान पार्श्वनाथ उपसर्गमयी, संकटमोचन, महासहिष्णु, क्षमासिंधु आदि विशेषणों से सहित थे।

यह **कालसर्पहर श्री पार्श्वनाथ विधान** कालसर्प आदि दोषों को दूर करने वाला है, संपूर्ण ग्रहों को अनुकूल करने वाला है। अतः इस विधान को करके आप सभी अपने जीवन में सुख, शान्ति को प्राप्त करें यही मंगल भावना है। विधान की पूर्णता पर प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद मेरे द्वारा रचित भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि वाराणसी तीर्थ की पूजा है। पूजा के बाद भगवान पार्श्वनाथ की एवं वाराणसी तीर्थ की मंगल आरती है। आरती के बाद कुछ भजन हैं।

इस प्रकार इस विधान में कुल 3 पूजा, 108 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य एवं 3 जयमालायें हैं। यह विधान करने, कराने वाले सभी जीवों के लिए मंगलकारी हो। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

दो शब्द

—आर्यिका सुव्रतमती

स्वदोष शान्त्यावहितात्मशांतिः शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद् भवक्लेश भयोपशान्त्यैः शांतिर्जिनो मे भगवान्शरण्यः।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि, वर्तमान में पीछीधारी सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित, परमपूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना की है। प्रतिक्षण पूज्य माताजी की यह भावना रहती है कि किस तरह से मैं वर्तमान में सभी भव्य जीवों को आगम के ज्ञान से, पूर्वाचार्यों की वाणी से सिंचित करूँ।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम है। जब लोग पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों की पंक्तियों को पढ़ते हैं तो वे भक्ति में भाव विभोर हो जाते हैं। भक्ति में उनके पैर थिरकने लग जाते हैं और वे भक्ति भाव से पूजा कर असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं। जब भगवान के दर्शनमात्र से पाप कर्म निर्जीण हो जाते हैं तो उनकी पूजा, भक्ति करने से तो विशेष पुण्य फल प्राप्त होता है।

धवला पु.–6 में आचार्य श्री वीरसेनस्वामी ने जिनबिम्ब दर्शन के महत्त्व का कितना सुन्दर वर्णन किया है–

दर्शनेन जिनेन्द्राणां पापसंघातकुंजरम्।
शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्रहतो यथा।।

अर्थात् जिनेन्द्रों के दर्शन से पापसंघातरूपी कुंजर के सौ टुकड़े हो जाते हैं, जिस प्रकार कि वज्र के आघात से पर्वत के सौ टुकड़े हो जाते हैं।

देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति, पूजा विशेष फल को देने वाली है। पूज्य माताजी की वाणी जिनवाणी है। लेखनी में सरस्वती का वास है। जिनागम का सार बताने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों पर 'सिद्धान्तचिन्तामणि' नाम की संस्कृत टीका लिखने वाली, राष्ट्रगौरव, युगनायिका, सिद्धान्तचक्रेश्वरी, वाग्देवी, डी. लिट्, दिव्यशक्ति आदि अनके उपाधियों से अलंकृत पूज्य माताजी इस युग के लिए वरदान हैं। इस विधान की प्रूफ रीडिंग के माध्यम से मुझे जो स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ है, वह मेरे भव भ्रमण को दूर का शीघ्र ही श्रुतज्ञान की प्राप्ति करावे, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 400 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्मित 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम, ग्वालियर में चिन्मामणि पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेद शिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा रथ-मांगीतुंगी (2015) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र	2
3.	श्री कलिकुंड पूजा	4
4.	श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा	8
5.	अथ 108 अर्घ्य	12
6.	जयमाला	26
7.	प्रशस्ति	28
8.	श्री पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी तीर्थ पूजा	29
9.	भगवान श्री पार्श्वनाथ की आरती	36
10.	वाराणसी तीर्थ की आरती	37
11.	भजन—धरती का तुम्हें नमन है.....	38
12.	भजन—नाम तिहारा तारन हारा.....	39
13.	भजन—विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा.....	40

मण्डल विधान का नक्शा

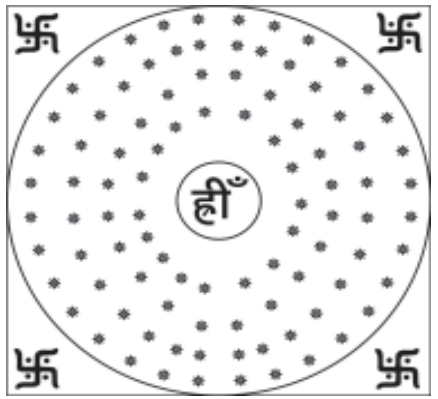

कुल पूजा–3, अर्घ्य 108, पूर्णार्घ्य–1, जयमाला–3।

कालसर्पहर श्री पार्श्वनाथ विधान

मंगलाचरण

–उपजाति छंद –

कल्याणकल्पद्रुमसारभूतं, चिंतामणिं चिंतितदानदक्षम्।
श्री पार्श्वनाथस्य सुपादपद्मं, नमामि भक्त्या परया मुदा च।।1।।

श्री पार्श्वनाथस्य नमोऽस्तु तुभ्यं।
दुःखार्तिनाशाय नमोऽस्तु तुभ्यं।।
अभीप्सितार्थाय नमोऽस्तु तुभ्यं।
त्रैलोक्यनाथाय नमोऽस्तु तुभ्यं।।2।।

–उपेंद्रवज्रा छंद –

भवे भवे दैत्यकृतोपसर्गं, सोढ्वा क्षमावान् जिनराजराजः।
महामनाः पार्श्वजिनः स्तुवे त्वां, सर्वंसहा मे कुरु नाथ! शक्तिम्।।3।।

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

–शंभु छंद –

भवसंकट हर्ता पार्श्वनाथ! विघ्नों के संहारक तुम हो।
हे महामना हे क्षमाशील! मुझमें भी पूर्ण क्षमा भर दो।।
यद्यपि मैंने शिव पथ पाया, पर यह विघ्नों से भरा हुआ।
इन विघ्नों को अब दूर करो, सब सिद्धि लहूँ निर्विघ्नतया।।1।।

वाराणसि नगरी धन्य हुई, धन धन्य हुए सब नर नारी।
हे अश्वसेन नंदन[1]! तुम से ब्राह्मी[2] माँ भी मंगलकारी।।
वैशाख वदी वह दूज भली, माता उर आप पधारे थे।
श्री आदि देवियों ने आकर, माता से प्रश्न विचारे थे।।2।।

शुभ पौष वदी ग्यारस तिथि थी, जब आए प्रभु साक्षात् यहाँ।
शैशव में सुर संग खेल रहे, अहियुग[3] को दीना मंत्र महा।।
तब नागयुगल धरणेन्द्र तथा, पद्मावती होकर भक्त बने।
शुभ पौष वदी ग्यारस के दिन, प्रभु दीक्षा ले मुनि श्रेष्ठ बने।।3।।

तत्क्षण मनपर्ययज्ञानी हो, सब ऋद्धी से परिपूर्ण हुए।
इक समय सघन वन के भीतर, प्रभु निश्चल ध्यानारूढ़ हुए।।
कमठासुर ने उपसर्ग किया, अग्नी ज्वाला को उगल-उगल।
पत्थर फेंके मूसलधारा, वर्षायी आंधी उछल-उछल।।4।।

निष्कारण ही कमठासुर ने, दश भव तक वैर निकाला था।
प्रभु को दुख दे देकर उसने, खुद को दुर्गति में डाला था।।
प्रभु महासहिष्णु क्षमा सिन्धु, भव-भव से सहते आये हैं।
तन से ममता को छोड़ दिया, नहिं किंचित् भी घबराये हैं।।5।।

प्रभु क्षपक श्रेणि में चढ़ करके, मोहनी कर्म का नाश किया।
उस ही क्षण धरणीपति पद्मावती, आ करके बहु भक्ति किया।।

---

1. उत्तरपुराण में 'विश्वसेन' नाम है। 2. वामा देवी भी नाम है।
3. सर्प-सर्पिणी।

प्रभु को मस्तक पर धारण कर, ऊपर से फण का छत्र किया।
प्रभुवर ने ही उस ही क्षण में, कैवल्यश्री को वरण किया।।6।।

पृथ्वी से बीस हजार हाथ, ऊपर पहुँचे अर्हंत बने।
इन्द्रों के आसन कांप उठे, प्रभु समवसरण गगनांगण में।।
वदि चैत्र चतुर्दश[1] तिथि उत्तम, जब प्रभु में ज्ञान प्रकाश हुआ।
उस स्थल का उस ही क्षण से, 'अहिच्छत्र' तीर्थ यह नाम हुआ।।7।।

नव हाथ देह सौ वर्ष आयु, मरकतमणि सम आभाधारी।
अहि[2] चिह्न सहित वे पार्श्वप्रभो! मुझको हों नित मंगलकारी।।
श्रावणसुदि सप्तमि तिथि के दिन, सिद्धीकांता से प्रीति लगी।
मैं नमूं तुम्हें पल-पल क्षण-क्षण, मेरी हो सर्व सहा मती।।8।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

1. उत्तरपुराण में चौदस तिथि है किन्तु कल्याणमाला पुस्तक व चालू पूजाओं में चतुर्थी तिथि है। 2. सर्प।

पूजा नं. १
श्री कलिकुंड पूजा

सिद्धं विशुद्धं महिमानवेशं। दुष्टारिमारि ग्रहदोषनाशं।
सर्वेषु योगेषु परं प्रधानं। संस्थापये श्रीकलिकुंडयंत्रं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं अर्हं श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् स्वाहा सन्निधापनं।

गंगापगातीर्थ सुनीर पूरैः। शीतैः सुगंधैर्घन सारमिश्रैः।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतोः। समर्चये श्रीकलिकुंडयंत्रं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथाय जलं निर्वपामि स्वाहा।

श्रीचंदनैर्गंधविलुब्धभृंगैः। सर्वोत्तमैर्गंधविलासयुक्तैः।।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतोः। समर्चये श्रीकलिकुंडयंत्रं।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथाय गंधं निर्वपामि स्वाहा।।

चंद्रावदातैः सरलैः सुगंधैः। अनिंद्यपात्रैर्वरशालिपुंजैः।।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतोः। समर्चये श्रीकलिकुंडयंत्रं।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथाय अक्षतान् निर्वपामि स्वाहा।

मंदारजातीबकुलादिकुंदैः। सौरभ्यरम्यैः शतपत्रपुष्पैः।।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतोः। समर्चये श्रीकलिकुंडयंत्रं।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथाय पुष्पं निर्वपामि स्वाहा।।

वाष्पायमाणैर्घृतपूरपूरै-र्नानाविधैः पात्रगतैः रसाढ्यैः।।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतोः। समर्चये श्रीकलिकुंडयंत्रं।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथाय नैवेद्यं निर्वपामि स्वाहा।।

विश्वप्रकाशैः कनकावदातैः। दीपैश्च कर्पूरमयैर्विशालैः।।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतोः। समर्चये श्रीकलिकुंडयंत्रं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथाय दीपं निर्वपामि स्वाहा।।

कर्पूरकृष्णागुरुचंदनाद्यैः। धूपैः सुगंधैर्वरद्रव्ययुक्तैः।।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतोः। समर्चये श्रीकलिकुंडयंत्रं।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथाय धूपं निर्वपामि स्वाहा।।

खर्जूरराजादननालिकेरैः रम्यैः फलैर्मोक्षफलाभिलाषैः।।
दुष्टोपसर्गैकविनाशहेतोः। समर्चये श्रीकलिकुंडयंत्रं।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथाय फलं निर्वपामि स्वाहा।।

जलगन्धाक्षतपुष्पै– र्नैवेद्यैर्दीपधूपफलनिकरैः।।
श्रीकलिकुंडाय वरं ददामि कुसुमाञ्जलिं विमलम्।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथाय अर्घ्यं निर्वपामि स्वाहा।।

ततो जिनेंद्रपादांते वारिधारां निपातये।
भृंगारनालिकोद्भांतां जिनमल्लोकशांतये।।10।।
शांतये शांतिधारा।।

अलंघ्यमुत्तमाधिपं दयालुसूरिवृंदकैः।
प्रफुल्लफुल्लमल्लिकैर्यजामि मुक्तिसिद्धये।।11।।
दिव्यपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्रीमद्देवेन्द्रवृंदामलमणिमुकुटज्योतिषां चक्रवालैः।
व्यालीढं पादपीठं शठ कमठ कृतोपद्रवा बाधितस्य।।
लोकालोकावभासिस्फुरदुरुविमलज्ञानसिद्धिप्रदीप–।
प्रध्वस्तध्वान्तजालस्य वितरतु सुखं पार्श्वनाथस्य नित्यं।।1।।
इति स्तोत्रार्घ्यं।।

(जाप्य 9 या 108 बार)

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथाय अतुलबलवीर्यपराक्रमा–यात्मविद्यां रक्ष रक्ष परविद्यां छिंद छिंद भिंद भिंद स्फ्रां स्फ्रूं स्फ्रौं स्फ्रः हूं फट् स्वाहा।

जयमाला

प्रोद्यत्सन्मणिनागनायकफटाटोपोल्लसन्मंडपं।।
सद्भक्त्या नमदिंद्रमौलिमणिभाभास्वत्पदांभोरुहं।।
प्रोन्मीलन्नवनीरदालिपटलीशंकासमुत्पादकं।।
ध्याये श्रीकलिकुंडदंडविकलसञ्चंडोग्रपार्श्वप्रभुं।।1।।

सुसिद्धि विशुद्ध विबोध निधान। विकाशितविश्व विवेकनिधान।।
विडंबितकामजगज्जयचंड। सदा सदयोदय जय कलिकुंड।।2।।

पयोधिपयोधरधीरनिनाद। निराकृतदुर्मतदुर्मदवाद।।
असत्यपथैकपतत्पविदंड। सदा सदयोदय जय कलिकुंड।।3।।

निराकुल निर्मलशील निरीहं। निराश निरंजन जिनवरसिंह।।
विपाटितदुष्टमदद्विपगंड। सदा सदयोदय जय कलिकुंड।।4।।

कषायचतुष्टयकाष्ठकुठार। निरामय नित्य नरामरसार।।
विदीर्णघनाघनविघ्नकरंड। सदा सदयोदय जय कलिकुंड।।5।।

अनल्प वितल्प विलीनविकल्प। विशल्य विशुल्ल (विशूल) विसर्प विदर्प।
विरोग विभोग विखंड विमुंड। सदा सदयोदय जय कलिकुंड।।6।।

फणीश नरेश सुरेश महेश। दिनेश मुनीश शुभेश गणेश।।
चिदर्क विकाशितशतदलतुंड। सदा सदयोदय जय कलिकुंड।।7।।

विशोक विशंक विमुक्तकलंक। विकासितविश्व विदूरितपंक।।
कलाकुल केवलचिन्मयपिंड। सदा सदयोदय जय कलिकुंड।।8।।

विखंडितमोहमहीरुहकंद। वरप्रद सत्पद संपद मंद (?)।।
त्रिदंड विखंडितमाय विखंड। सदा सदयोदय जय कलिकुंड।।9।।

–घत्ता–

कलिलदमनदक्षं योगियोगोपलक्षं।
अविकल कलिकुंडोद्दंडपार्श्वप्रचंडं।।

शिवसुखशुभ संपद्वासवल्लीवतं।
प्रतिदिनमहमीडे वर्द्धमानर्द्धिसिद्धयै।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकलिकुंडपार्श्वनाथाय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामि स्वाहा।।

दशावतारो भुवनैकमल्लो। देवांगनाशोभितपादपद्म।
श्रीपार्श्वनाथ पुरुषोत्तमोयं। ददातु वः सर्व समीहितानि।।1।।

इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा

अथ स्थापना–शंभु छंद

(तर्ज–यह नंदनवन....)

श्री पार्श्व प्रभू, त्रिभुवन के विभू, हम पूजा करने आये हैं।
निज आत्म सुधारस मिल जावे, यह आशा लेकर आये हैं।।टेक।।

आह्वानन संस्थापन करके, सन्निधीकरण विधि करते हैं।
निज हृदय कमल में धारण कर, अज्ञान तिमिर को हरते हैं।।
कमठारिजयी प्रभु क्षमाशील, की अर्चा करने आये हैं।
श्री पार्श्वप्रभू, त्रिभुवन विभू, हम पूजा करने आये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकर ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकर ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकर ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टकं

(चाल–पूजों पूजों श्री अरहंत देवा.....)

स्वच्छ आकाश गंगा जल है, निज आत्मा का हरता मल है।
धार देते मिले इष्ट फल है, श्री पार्श्वनाथ वंदन करें हम नित ही।।
आवो पार्श्व प्रभु के गुण गायें, जो कलिकुंडदण्ड कहाये।
इन्हें पूजें परम सुख पायें, श्री पार्श्वनाथ वंदन करें हम नित ही।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गंध कर्पूर केशर मेला, सौगंधित सुमिश्रित एला।
ताप संताप हरत अकेला, श्री पार्श्वनाथ वंदन करें हम नित ही।।
।।आवो पार्श्व.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

श्वेत मोती सदृश तंदुल हैं, पुंज धरते हृदय निर्मल है।
लाभ होता सुगुण उज्ज्वल है, श्री पार्श्वनाथ वंदन करें हम नित ही।।
।।आवो पार्श्व.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

वुंद मंदार सुमनस माला, कामदेव निमूल कर डाला।
आत्म संपद गुणों की माला, श्री पार्श्वनाथ वंदन करें हम नित ही।।
।।आवो पार्श्व.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मुद्ग लाडू इमरती भरके, पूजते भूख रोगादि हर के।
आत्म पीयूष अनुभव करके, श्री पार्श्वनाथ वंदन करें हम नित ही।।
।।आवो पार्श्व.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण दीपक शिखा उज्ज्वल है, आरती से हरे मोह मल है।
होता आत्मा अपूर्व विमल है, श्री पार्श्वनाथ वंदन करें हम नित ही।।
।।आवो पार्श्व.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप खेऊँ सुरभि दशगंधी, धूम्र फैले दशों दिश गंधी।
होय कर्म अरी शतखंडी, श्री पार्श्वनाथ वंदन करें हम नित ही।।
।।आवो पार्श्व.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आम अंगूर दाड़िम फल हैं, जो फल दे उत्तम सुफल हैं।
तीन रत्नों की संपत्ति फल हैं, श्री पार्श्वनाथ वंदन करें हम नित ही।।
।।आवो पार्श्व.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि द्रव्य मिलाके, पूर्ण सौख्यादि होवे चढ़ाके।
अष्टकर्मारि बंधन हटा के, श्री पार्श्वनाथ वंदन करें हम नित ही।।
।।आवो पार्श्व.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये निर्वपामीति स्वाहा।

–शेर छंद–

गंगा नदी का जल पवित्र स्वर्ण भृंग में।
कैवल्यज्ञान से पवित्र आप चर्ण में।।
त्रयधार दे के शांतिधार मैं सदा करूँ।
तिहुँलोक में भी शांति हो यह कामना करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

स्याद्वाद के उद्यान में बहुविध कमल खिले।
प्रभु गुण सुगंधि के समान सुरभि से मिले।।
बेला गुलाब पुष्प से प्रभु पाद कमल में।
पुष्पांजली करते निजात्म सौख्य हृदय में।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका गर्भ कल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।टेक0।।

अश्वसेन पितु वामा माता, तुमको पाकर धन्य हुए।
तिथि वैशाख वदी द्वितिया को, गर्भ बसे जगवंद्य हुए।।
प्रभु का गर्भकल्याणक पूजत, मिले निजातम सार है।।
पार्श्वनाथ.।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका जन्मकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि उत्तम, वाराणसि में जन्म हुआ।
श्री सुमेरु की पांडुशिला पर, इन्द्रों ने जिन न्हवन किया।।
जो ऐसे जिनवर को जजते, हो जाते भव पार हैं।।
पार्श्वनाथ.।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका तपकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

पौषवदी ग्यारस जाति स्मृति, से बारह भावन भाया।
विमलाभा पालकि में प्रभु को, बिठा अश्ववन पहुँचाया।।
स्वयं प्रभू ने दीक्षा ली थी, जजत मिले भव पार है।।
पार्श्वनाथ.।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका ज्ञानकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

चैत्रवदी सुचतुर्थी[1] प्रातः, देवदारु तरु के नीचे।
कमठ किया उपसर्ग घोर तब, फणपति पद्मावति पहुँचे।।

1. उत्तरपुराण में चौदश है। कल्याणमाला पुस्तक में चतुर्थी तिथि है।

जित उपसर्ग केवली प्रभु का, समवसरण हितकार है।।
पार्श्वनाथ.।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका मोक्षकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

श्रावण शुक्ल सप्तमी पारस, सम्मेदाचल पर तिष्ठे।
मृत्युजीत शिवकांता पायी, लोकशिखर पर जा तिष्ठे।।
सौ इन्द्रों ने पूजा करके, लिया आत्म सुखसार है।।
पार्श्वनाथ.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

पार्श्वनाथ पादाब्ज को, पूजूँ बारम्बार।
पूर्ण अर्घ्य से जजत ही, पाऊँ सौख्य अपार।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ 108 अर्घ्य

–दोहा–

पार्श्वनाथ जिन बालयति, नमूँ नमूँ शत बार।
पुष्पांजलि से पूजते, भरे सौख्य भंडार।।1।।

।।अथ मण्डलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

–सोरठा–

'महाशोकध्वज' नाम, महाशोकतरु चिन्ह है।
करूँ अनंत प्रणाम, शोक हरो हे पार्श्व जिन!।।1।।

ॐ ह्रीं महाशोकध्वजाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुत्र स्त्री मित्रादि, रहित शोक अणुमात्र ना।
नाथ! 'अशोक' सुपाद, नमत शोक दुख नाश हो।।2।।

ॐ ह्रीं अशोकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् ब्रह्मा आप, 'क' प्रसिद्ध परमात्मा।
जजत हरें जन पाप, सर्वसौख्य पावें सदा।।3।।

ॐ ह्रीं काय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सृष्टा' नमूँ त्रिकाल, निंदित दुर्गति दुख लहें।
वीतराग जगपाल, पूजत जन दिव मोक्ष लें।।4।।

ॐ ह्रीं स्रष्ट्रे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलासन पर नाथ, तिष्ठ 'पद्मविष्टर' बने।
नमूँ जोड़ जुग हाथ, यश सौरभ जग में भ्रमें।।5।।

ॐ ह्रीं पद्मविष्टराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी के पति देव, कहलाए 'पद्मेश' तुम।
नमते हो दुख छेव, मिले नवों निधि संपदा।।6।।

ॐ ह्रीं पद्मेशाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीविहार में देव, स्वर्णकमल सुरभित रचें।
चरण तले जिनदेव, पूजत यश सुरभी उड़े।।7।।

ॐ ह्रीं पद्मसंभूतये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाभी कमल समान, 'पद्मनाभि' कहते मुनी।
धरूँ आपका ध्यान, कमल बनाकर नाभि में।।8।।

ॐ ह्रीं पद्मनाभये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सम कोई न अन्य, नाम 'अनुत्तर' ऋषि कहें।
जजत बनें जन धन्य, सम्यग्दर्शन शुद्धि से।।9।।

ॐ ह्रीं अनुत्तराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी हो उत्पन्न, प्रभो! आपकी भक्ति से।
'पद्मयोनि' अन्वर्थ, नमत मिले गुण संपदा।।10।।

ॐ ह्रीं पद्मयोनये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म जगत् का जन्म, हुआ आप से हे प्रभो!।।
'जगत्योनि' शुभ नाम, जजत जगत् से पार हों।।11।।

ॐ ह्रीं जगद्योनये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से भविजन आप, प्राप्त करें रुचि मन धरें।
'इत्य' नाम निष्पाप, शरणागत मैं आपकी।।12।

ॐ ह्रीं इत्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रादिक से नित्य, स्तुति योग्य तुम्हीं प्रभो!।
त्रिभुवन में 'स्तुत्य' मैं स्तवन करूँ सदा।।13।।

ॐ ह्रीं स्तुत्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्तुति के तुम ईश, साधु 'स्तुतीश्वर' कहें।
नमूँ नमाकर शीश, गुण गाऊँ हर्षितमना।।14।।

ॐ ह्रीं स्तुतीश्वराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिगण के स्तुति योग्य, 'स्तवनार्ह' प्रसिद्ध हो।
मिले मुक्ति संयोग, जजते भेदविज्ञान हो।15।।

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया पंचेन्द्रिय वश्य, 'हृषीकेश' श्रुतमान्य हो।
जो जन जजें अवश्य, सौख्य अतीन्द्रिय लें भले।16।।

ॐ ह्रीं हृषीकेशाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहादिक अरिजीत, कहलाये 'जितजेय' तुम।
जो पूजें धर प्रीत, मोह हरें निर्मम बनें।17।।

ॐ ह्रीं जितजेयाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करने योग्य समस्त, क्रिया पूर्ण कर शिव गये।
वंदत चित्त प्रशस्त, 'कृतक्रिय' जजते सिद्धि हो।।18।।

ॐ ह्रीं कृतक्रियाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशगण के नाथ, समवसरण में आप ही।
मुझको करो सनाथ, जजूँ 'गणाधिप' आपको।।19।।

ॐ ह्रीं गणाधिपाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी गणों में श्रेष्ठ, श्रेष्ठ गुणाकर आप हैं।
नमूँ तुम्हें 'गणज्येष्ठ', गुणमणि को पाऊँ अबे।20।।

ॐ ह्रीं गणज्येष्ठाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में प्रभु आप, गणना करने योग्य हैं।
वंदत नशते पाप, 'गण्य' तुम्हें मैं भी जजूँ।।21।।

ॐ ह्रीं गण्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको किया पवित्र, 'पुण्य' तुम्हें मुनिगण कहें।
मुझको करो पवित्र, पुनः पुनः याञ्चा करूँ।।22।।

ॐ ह्रीं पुण्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हितपथ में ले जायं, सभी भक्त को आप ही।
'गणाग्रणी' तुम पाय, वंदूं निज नेता बनूँ।।23।।

ॐ ह्रीं गणाग्रण्ये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनंतगुणखान, साधु 'गुणाकर' कह रहे।
वंदत हों गुणवान, हो तुम गुण वर्णन करें।।24।।

ॐ ह्रीं गुणाकराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण में आप समुद्र, 'गुणाम्भोधि' हो विश्व में।
नमत बने उन्निद्र, पावें निज के गुण सभी।25।।

ॐ ह्रीं गुणाम्भोधये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण के ज्ञाता सिद्ध, तुम 'गुणज्ञ' जगख्यात हो।
मुझ गुण सर्वप्रसिद्ध, होवेंगे तुम भक्ति से।।26।।

ॐ ह्रीं गुणज्ञाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणनायक' भगवान, तुमको जो वंदे सदा।
निजगुण से धनवान, हो जाते वे शीघ्र से।।27।।

ॐ ह्रीं गुणनायकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणादरी' प्रभु सिद्ध, मैं भी गुण आदर करूँ।
पूजत हो नव निद्ध, क्रम से जिनगुण संपदा।।28।।

ॐ ह्रीं गुणादरिणे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक बहुभाव, वैभाविक गुण जगत में।
नाश धरा निजभाव, नमूँ 'गुणोच्छेदी' तुम्हें।।29।।

ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विभावगुण शून्य, 'निर्गुण' कहलाये प्रभो!।
नमत मिले गुण पूर्ण, पूजूँ मन वच काय से।।30।।

ॐ ह्रीं निर्गुणाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'पुण्यगी' सिद्ध, दिव्यध्वनी के तुम धनी।
तुम वचसुधा समृद्ध, भविजन स्वस्थ पवित्र हों।।31।।

ॐ ह्रीं पुण्यगिरे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण से सहित प्रधान, 'गुण' कहलाये शास्त्र में।
स्वात्म सुधारस पान, हेतु नमूँ प्रभु पार्श्व को।।32।।

ॐ ह्रीं गुणाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसे भय हो दूर, शरणागत के नाथ हो।
मिले ज्ञान भरपूर, नमूँ 'शरण्य' जिनेश को।।33।।

ॐ ह्रीं शरण्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यवाक्'[1] जिन सिद्ध पूर्वापर अविरुध वचन।
होवे चारित रिद्ध, इसी हेतु वंदन करूँ।।34।।

ॐ ह्रीं पुण्यवाचे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावकर्ममल शून्य, पूर्ण पवित्र तुम्हीं प्रभो!।
रत्नत्रय निधि पूर्ण, हेतु 'पूत' भगवन् नमूँ।।35।।

ॐ ह्रीं पूताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. 'पूतवाक्' यह पाठांतर आदिपुराण में है।

मुक्तिरमा को आप, वरण किया भव नाश के।
प्रभु 'वरेण्य' गुरु आप, जजूँ आप सम निधि मिले।।36।।

ॐ ह्रीं वरेण्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करता आत्म पवित्र, पुण्य वही है लोक में।
मुझ मन करो पवित्र, जजूँ 'पुण्यनायक' तुम्हीं।।37।।

ॐ ह्रीं पुण्यनायकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम गुणगण ना शक्य, नहीं कभी गणधर कहें।
इससे तुम्हीं 'अगण्य' जजते अगणित सौख्य हो।।38।।

ॐ ह्रीं अगण्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पुण्यधी' नाथ, शुद्ध बुद्ध ज्ञानी तुम्हीं।
नमूँ नमूँ नत माथ, शुद्ध निरंजन पद मिले।।39।।

ॐ ह्रीं पुण्यधिये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह गण के नाथ, सबके हितकारी तुम्हीं।
मिले महाव्रत सार्थ, 'गण्य'[1] तुम्हें वंदन करूँ।।40।।

ॐ ह्रीं गण्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्यतीर्थ करतार, आप 'पुण्यकृत्' सिद्ध हैं।
नमूँ अनंतों बार, एक मुक्ति के हेतु मैं।।41।।

ॐ ह्रीं पुण्यकृते श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्षदातार, आप 'पुण्यशासन' कहे।
मिले ज्ञान भंडार, प्रभु तुम मत की शरण है।।42।।

ॐ ह्रीं पुण्यशासनाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'धर्माराम', नंदनवन सम धर्म है।
मिले स्वात्म सुखधाम, वंदन करते भव नशे।।43।।

ॐ ह्रीं धर्मारामाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे अनंतानंत, गुण समूह भगवान् तुम।
'गुणग्राम' भगवंत, पूजत ही गुणमणि मिले।।44।।

ॐ ह्रीं गुणग्रामाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. 'गुण्य' यह पाठांतर आदिपुराण में है।

पुण्य पाप के द्वार, संवर से रोका प्रभो!।
वंदूं मैं शत बार, 'पुण्यपापरोधक' तुम्हीं।।45।।

ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यनिरोधकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पापापेत' महान् , हिंसादिक से शून्य हो।
नमत बनूं धनवान्, संयमनिधि को पूर्ण कर।।46।।

ॐ ह्रीं पापापेताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्मजन्य सुख प्राप्त, प्रभो 'विपापात्मा' नमूँ।
समकित निधि हो प्राप्त, मिले शुद्ध उपयोग झट।।47।।

ॐ ह्रीं विपापात्मने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु को नाश, सिद्ध 'विपात्मा' हो गये।
शिवलक्ष्मी की आश, धर मन में वंदन करूँ।।48।।

ॐ ह्रीं विपात्मने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलिमल किया विनाश, नाथ 'वीतकल्मष' तुम्हीं।
नहिं भवसुख की आश, नमत अतीन्द्रिय सुख मिले।।49।।

ॐ ह्रीं वीतकल्मषाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जगद्वंद विभाव, परिग्रह विरहित सिद्ध हो।
प्रभु 'निर्द्वंद्व' स्वभाव, जजत कलह दुख दूर हो।।50।।

ॐ ह्रीं निर्द्वंद्वाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चित्रपदा छंद–

'निर्मद' पार्श्व तुम्हीं हो , मान कषाय जयी हो।
वंदत हो निज संपत्, नाथ! जजूँ धर प्रीती।।51।।

ॐ ह्रीं निर्मदाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांत' स्वभाव जिनेशा, पूर्ण शांति तुममें ही।
पूजत विपद् नशेगी, शांति अपूर्व मिलेगी।।52।।

ॐ ह्रीं शांताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप प्रभो 'निरमोही', मोह ध्वांत मुझ नाशो।
मोक्षपुरी मिल जावे, नाथ! तुम्हें मैं पूजूँ।।53।।

ॐ ह्रीं निर्मोहाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व उपद्रव नाशा, 'निरुपद्रव' कहलाये।
शोक वियोग नशेंगे, जो जजते धर भक्ती।।54।।

ॐ ह्रीं निरुपद्रवाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र पलक ना झपकें, 'निर्निमेष' भगवंता।
दर्शन करूँ तुम्हारा, नेत्र सफल हों मेरे।।55।।

ॐ ह्रीं निर्निमेषाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवलाहार तुम्हें ना, नाथ 'निराहारी' हो।
क्षुधा तृषा की व्याधी, पूजन से नशती है।।56।।

ॐ ह्रीं निराहाराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्क्रिय' सिद्ध महंता, नंत गुणों के कंता।
पूजत हो सुख साता, स्वात्म सुधारस पाके।।57।।

ॐ ह्रीं निष्क्रियाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'निरूपप्लव' हो, बाध विकार नहीं है।
कर्म नशें सब मेरे, वंदन से सुख संपत्।।58।।

ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कलंक' अभिरामा, शीघ्र वरी शिवरामा।
दुःख दरिद्र विनाशो, वंदत ज्ञान प्रकाशो।।59।।

ॐ ह्रीं निष्कलंकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! निरस्तैना हो, सर्व कर्म हीना हो।
मैं प्रभु अपराधी हूँ, दृष्टि कृपा की कीजे।।60।।

ॐ ह्रीं निरस्तैनसे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप नहीं अपराधी, 'निर्धूतागस' मानें।
मुझ अपराध क्षमा हो, जन्म मरण से छूटूं।।61।।

ॐ ह्रीं निर्धूतागसे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कर्म आस्रव से, शून्य 'निरास्रव' ही हो।
आस्रव का रोधन हो, पूजत संवर प्रगटे।।62।।

ॐ ह्रीं निरास्रवाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विशाल' तुम्हीं हो, श्रेष्ठ महान जगत में।
पूजत सौख्य विशाला, ज्ञान विशाल बनेगा।।63।।

ॐ ह्रीं विशालाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुज्योती, नाथ! 'विपुलज्योती' हो।
भेदविज्ञान मिलेगा, वंदन से पूजन से।।64।।

ॐ ह्रीं विपुलज्योतिषे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अतुल' नहिं तुलना, नंत गुणों की गणना।
ज्ञान सुखामृत पाऊँ, वंदत पाप नशाऊँ।।65।।

ॐ ह्रीं अतुलाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अचिन्त्यवैभव' युत, चिंतन करते योगी।
भक्ति करें जो जन भी, बोधि समाधि लहें वो।।66।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्यवैभवाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव कर्म रुके हैं, नाथ! 'सुसंवृत' माने।
संवर मुझे मिलेगा, भक्ति सहाय बनेगी।।67।।

ॐ ह्रीं सुसंवृताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'सुगुप्तात्मा' हो, तीन गुप्तिसंयुत हो।
काय वचन मनगुप्ती, देकर देवो तृप्ती।।68।।

ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पदार्थ सुज्ञाता, 'सुभुत[1]' सिद्ध भगवंता।
ज्ञान हमारा पूरो, सब अज्ञान निवारो।।69।।

ॐ ह्रीं सुभुजे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. 'सुबुध' पाठांतर है टीका में।

ज्ञान नयों का सम्यक्, 'सुनयतत्त्ववित्' स्वामी।
सत्य सुनय को जानूँ, स्यात्पद जजते मुक्ती।।70।।

ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वविदे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकविद्य' भगवंता, केवलज्ञान धरंता।
एक ज्ञान मुझ दीजे, कर्म कलंक हरीजे।।71।।

ॐ ह्रीं एकविद्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाविद्य' जिनदेवा, विद्या बहुत तुम्हीं में।
वंदत पाप नशेंगे, केवलबोध खिलेगा।।72।।

ॐ ह्रीं महाविद्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत् चराचर जानो, आप मुनी परधाना।
उत्तम 'मुनी' बनूं मैं, पूजत आश फलेगी।।73।।

ॐ ह्रीं मुनये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर आप सभी के, शास्त्र 'परिवृढ' कहते।
वंदन पादकमल का, नाश करे सब विपदा।।74।।

ॐ ह्रीं परिवृढाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसृति दुख से रक्षो, प्राणिमात्र पे करुणा।
आप 'पती' कहलाये, जग के नाथ तुम्हीं हो।।75।।

ॐ ह्रीं पतये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीश' बुद्धि के पति हो, शुद्ध करो मुझ बुद्धी।
मैं तुम पादकमल की, पूजन करूँ रुची से।।76।।

ॐ ह्रीं धीशाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विद्यानिधि' श्रुतनिधि हो, शास्त्र स्वपर के वेत्ता।
ज्ञानगुणाम्बुधि माने, मैं रुचि से नित पूजूँ।।77।।

ॐ ह्रीं विद्यानिधये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'साक्षी' तीन भुवन के, देख लिया प्रभु साक्षात्।
वंदत केवल लक्ष्मी, भव्य करें निज कर में।।78।।

ॐ ह्रीं साक्षिणे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नम्र किया शिवपथ में, नाथ! 'विनेता' जग में।
वंदन शत शत मेरा, दूर करो भव फेरा।।79।।

ॐ ह्रीं विनेत्रे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु कहे 'विहतान्तक', मृत्यु विनाश किया है।
नाश करूँ यम का मैं, स्वात्म निधी मिल जावे।।80।।

ॐ ह्रीं विहतान्तकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गति से रक्षक हो, आप 'पिता' त्रिभुवन के।
पूजन से निज लब्धी, सर्व दुःखों से मुक्ती।।81।।

ॐ ह्रीं पित्रे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप जगत् के गुरु हैं, नाम 'पितामह' ख्याता।
मैं गुरु तुम्हें बनाऊँ, फेर न भव में आऊँ।।82।।

ॐ ह्रीं पितामहाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोक रोग आदिक से , 'पाता' करते रक्षा।
हे प्रभु! जिन को पाके, स्वस्थ बनूं गुण गाके।।83।।

ॐ ह्रीं पात्रे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पवित्र' तुम्हीं हो, पावन करते प्राणी।
पावन हो मुझ आत्मा, पूजन से फल प्राप्ती।।84।।

ॐ ह्रीं पवित्राय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पावन' सिद्ध कहाये, वंदत सौख्य बढ़ायें।
हो मन पावन मेरा, काय वचन भी शुचि हों।।85।।

ॐ ह्रीं पावनाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'गती' हैं जग में, आर्त दूर कर देते।
ज्ञानमात्र हो स्वामी, पूजत पंचमगति हो।।86।।

ॐ ह्रीं गतये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य जनों के 'त्राता', भक्त इसी से जजते।
काय वचन मन से मैं, ध्यान धरूँ प्रभु तेरा।।87।।

ॐ ह्रीं त्रात्रे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'भिषग्वर' तुम ही, पूर्ण स्वस्थ कर देते।
जन्म मरण रोगों से, भक्त छुटें निश्चित ही।।88।।

ॐ ह्रीं भिषग्वराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तिरमा को वर के, 'वर्य' कहाए जग में।
इंद्रगणों से वेष्टित, मैं नत हूँ श्रीपद में।।89।।

ॐ ह्रीं वर्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छित फल देते हो, नाथ 'वरद' कहलाये।
बोधि समाधि मुझे दो, एक यही वर मांगूँ।।90।।

ॐ ह्रीं वरदाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पालन पोषण कर्ता, आप 'परम' भव्यों के।
इष्ट फलों को देकर, पूजन का फल मिलता।।91।।

ॐ ह्रीं परमाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मा पावन कर, आप 'पुमान' कहाये।
भाक्तिकजन मन शुद्धी, वंदन से झट होती।।92।।

ॐ ह्रीं पुंसे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अधर्म निरूपा, नाथ 'कवी' मुनि गायें।
मैं तुम गुण गा गाके, सफल करूँ निज रसना।।93।।

ॐ ह्रीं कवये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध 'पुराणपुरुष' हो, आदि अंत नहिं होता।
प्रभु पुरुषार्थ करूँ मैं, मोक्ष मिले अर्चन से।।94।।

ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वर्षीयान्' गुणों से, अतिशय वृद्ध कहाये।
स्वात्मगुणों की वृद्धी, हो मुझ में यह मांगूँ।।95।।

ॐ ह्रीं वर्षीयसे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'ऋषभ' माने हो, पूर्ण जगत् को जानो।
श्रेष्ठ ज्ञान गुण दीजे, मोह अंधेर हरीजे।।96।।

ॐ ह्रीं ऋषभाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरु' महान भगवंता, वंदन करूँ तुम्हारा।
दान अभय का दीजे, दूर करो भव फेरा।।97।।

ॐ ह्रीं पुरवे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रतिष्ठाप्रभवा', उत्पत्ती तुमसे ही।
सुस्थिरता प्रगटेगी, वंदन करूँ सदा मैं।।98।।

ॐ ह्रीं प्रतिष्ठाप्रसवाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हेतु' तुम्हीं हो जग में, भुक्ति मुक्तिप्रद माने।
रत्नत्रय निधि दीजे, वंदत सुख संपत् हो।।99।।

ॐ ह्रीं हेतवे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप एक त्रिभुवन के, कहे पितामह स्वामी।
एकमात्र गुरु माने, पूजत ही भव हानें।।100।।

ॐ ह्रीं भुवनैकपितामहाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद–

हे 'महाध्वरधर' प्रभु पारस विभो।
महाउपसर्ग विजयी नमूं आपको।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।101।।

ॐ ह्रीं महाध्वरधराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धुर्य' हो मुक्ति के मार्ग में श्रेष्ठ हो।
कमठ को जीत के सर्व में ज्येष्ठ हो।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।102।।

ॐ ह्रीं धुर्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महौदार्य' अतिशायि ऊदार हो।
आप निर्ग्रन्थ भी इष्ट दातार हो।।

आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।103।।

ॐ ह्रीं महौदार्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य वाक्याधिपति सु 'महिष्ठवाक्' हो।
दिव्यवाणी सुधावृष्टि कर्ता सु हो।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।104।।

ॐ ह्रीं महिष्ठवाचे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक आलोक व्यापी 'महात्मा' तुम्हीं।
अंतरात्मा पुनः सिद्ध आत्मा तुम्हीं।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।105।।

ॐ ह्रीं महात्मने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व तेजोमयी 'महसांधाम' हो।
आत्म के तेज से पार्श्व प्रभु मान्य हो।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।106।।

ॐ ह्रीं महासांधाम्ने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व ऋषि में प्रमुख हो 'महर्षि' तुम्हीं।
ऋद्धि सिद्धी धरो आप सुख ही मही।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।107।।

ॐ ह्रीं महर्षये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ भव धारके आप 'महितोदया'।
पार्श्व जिन नाम से पूज्य धर्मोदया।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।108।।

ॐ ह्रीं महितोदयाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

पार्श्वनाथ प्रभु बालयति, हैं जग के आधार।
पूर्ण अर्घ्य से मैं जजूं, हो जाऊं भव पार।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य – **ॐ ह्रीं कमठोपसर्ग–विजयिने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

(शंभु छंद-तर्ज-चंदन सा वदन.....)

जय पार्श्व प्रभो! करुणासिंधो! हम शरण तुम्हारी आये हैं।
जय जय प्रभु के श्रीचरणों में, हम शीश झुकाने आये हैं।।टेक.।।

नाना महिपाल तपस्वी बन, पंचाग्नी तप कर रहा जभी।
प्रभु पार्श्वनाथ को देख क्रोधवश, लकड़ी फरसे से काटी।।
तब सर्प युगल उपदेश सुना, मर कर सुर पद को पाये हैं।।जय.।।1।।

यह सर्प सर्पिणी धरणीपति, पद्मावति यक्षी हुए अहो।
नाना मर शंबर ज्योतिष सुर, समकित बिन ऐसी गती अहो।।
नहिं ब्याह किया प्रभु दीक्षा ली, सुर नर पशु भी हर्षाये हैं।।जय.।।2।।

प्रभु अश्वबाग में ध्यान लीन, कमठासुर शंवर आ पहुँचा।
क्रोधित हो सात दिनों तक बहु, उपसर्ग किया पत्थर वर्षा।।
प्रभु स्वात्म ध्यान में अविचल थे, आसन कंपते सुर आये हैं।।जय.।।3।।

धरणेंद्र व पद्मावति ने फण पर, लेकर प्रभु की भक्ती की।
रवि केवलज्ञान उगा तत्क्षण, सुर समवसरण की रचना की।।
अहिच्छत्र नाम से तीर्थ बना, अगणित सुरगण हर्षाए हैं।।जय.।।4।।

यह देख कमठचर शत्रू भी, सम्यक्त्वी बन प्रभु भक्त बने।
मुनिनाथ स्वयंभू आदिक दश, गणधर थे ऋद्धीवंत घने।।

सोलह हजार मुनिराज प्रभू के, चरणों में शिर नाये हैं।।जय.।।5।।

गणिनी सुलोचना प्रमुख आर्यिका, छत्तिस सहस धर्मरत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकायें, त्रय लाख वहाँ जिन भाक्तिक थीं।।
प्रभु सर्प चिन्ह तनु हरित वर्ण, लखकर रवि शशि शर्माये हैं।।जय.।।6।।

नव हाथ तुंग सौ वर्ष आयु, प्रभु उग्र वंश के भास्कर हो।
उपसर्गजयी संकटमोचन, भक्तों के हित करुणाकर हो।।
प्रभु महासहिष्णू क्षमासिंधु, हम भक्ती करने आये हैं।।जय.।।7।।

चौंतिस अतिशय के स्वामी हो, वर प्रातिहार्य हैं आठ कहे।
आनन्त्य चतुष्टय गुण छ्यालिस, फिर भी सब गुण आनन्त्य कहे।।
बस केवल 'ज्ञानमती' हेतू, प्रभु तुम गुण गाने आये हैं।।
जय पार्श्व प्रभो! करुणासिंधो! हम शरण तुम्हारी आये हैं।।जय.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद –

जो भव्य कालसर्पहर विधान करेंगे।
वे कालसर्प आदि दोष दूर करेंगे।।
संपूर्ण ग्रहों को सदा अनुकूल करेंगे।
'सज्ज्ञानमती' सूर्य से उद्योत करेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–दोहा –

तीर्थंकर चक्री मदन, त्रयपद धारी ईश।
शांतिनाथ भगवान को, नमूँ-नमूँ नत शीश।।1।।

कुंथुनाथ-अरनाथ प्रभु, तीन-तीन पद नाथ।
इनके श्री चरणाब्ज को, नमूँ नमाकर माथ।।2।।

वर्तमान में वीर प्रभु, शासनपति भगवान।
इनके शासन में हुये, बहु आचार्य महान।।3।।

मूलसंघ में कुंदकुंद, अन्वय सरस्वति गच्छ।
बलात्कार गण में हुए , सूरि नमूँ मन स्वच्छ।।4।।

सदी बीसवीं के प्रथम, गुरु दिगंबराचार्य।
चरित चक्रवर्ती श्री, शांतिसागराचार्य।।5।।

इनके पट्टाचार्य श्री, वीरसागराचार्य।
आर्यिका दीक्षागुरु, नमूँ भक्ति उर धार्य।।6।।

मैंने गणिनी ज्ञानमती, किया विधान प्रपूर्ण।
कालसर्पहर विधान यह, भरे सौख्य संपूर्ण।।7।।

जब तक जम्बूद्वीप की, कीर्ति जगत् में व्याप्त।
तब तक ''ज्ञानमती'' कृती, रहे विश्व विख्यात।।8।।

।।इति शं भूयात्।।

पूजा नं. 3

श्री पार्श्वनाथ जन्मभूमि वाराणसी तीर्थ पूजा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

स्थापना (शंभु छंद)

जिस वाराणसि नगरी का हमने, नाम सुना है ग्रंथों में।
जो पावन और पवित्र सुपारस, पार्श्वनाथ के चरणों से।।
उस जन्मभूमि तीरथ की पूजन, हेतु करूँ आह्वानन मैं।
स्थापन सन्निधिकरण करूँ, वाराणसि तीर्थ का अर्चन मैं।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथ–पार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथ–पार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथ–पार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छंद)

हे नाथ! विषयसुख की इच्छा में, मैंने निज को भरमाया।
लेकिन दुःखों की वैतरणी में, किंचित् भी सुख नहिं पाया।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधाग्नी में जलकर अब तक, अपना सर्वस्व लुटाया है।
अब चंदन से पूजा करने का, भाव हृदय में आया है।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयनिधि की पहचान बिना, जड़ को आत्मा मैंने माना।
पूजन में अक्षत पुंज चढ़ा, अब चाहूँ अक्षय पद पाना।।
वाराणसि नगरी की पूजन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं कामभोग की मदिरा से, अब तक मतवाला बना रहा।
उसकी संतृप्ति हेतू मैं, अब पुष्पमाल को चढ़ा रहा।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इस क्षुधा रोग की ज्वाला से, भव भव में जलता आया हूँ।
उस ज्वाला की उपशांति हेतु, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्री सुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहान्धकार में पड़ा-पड़ा, संसार में ही परिभ्रमण किया।
वह मोह दूर करने हेतू, दीपक का अब अवलंब लिया।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों का इस आत्मा के संग, बंधन अनादि से चला किया।
उस बन्धन से मुक्ती हेतू, मैं धूप अग्नि में जला दिया।।

वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

इतने फल भव-भव में खाये, उसका फल क्या पाया मैंने।
उत्तम शिवफल की आश में अब, फल थाल चढ़ाया है मैंने।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

सांसारिक अभिलाषाओं में, नहिं पद अनर्घ्य पहचान सका।
"चन्दनामती" अब अर्घ्य लिये, किंचित् उस पद को जान सका।।
वाराणसि नगरी का अर्चन, अब मुझको शांति दिलाएगी।
जिसकी पूजन से श्रीसुपार्श्व, पारस की स्मृति आएगी।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

गंगनदी का नीर ले, करूँ तीर्थ पर धार।
आत्मा भी निर्मल बने, पाऊँ शांति अपार।।10।।

शांतये शांतिधारा

वाराणसि उद्यान के, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, वाराणसि के माँहि।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः

वाराणसी तीर्थक्षेत्र के अर्घ्य (शंभु छंद)

भादों सुदि षष्ठी को जहाँ गर्भ, कल्याणक हुआ सुपारस का।
इन्द्रों ने तब उत्सव कीना, जिनवर के गर्भकल्याणक का।।

राजा सुप्रतिष्ठ की रानी पृथ्वी-षेणा भी तब पूज्य बनी।
उस गर्भागम से पावन नगरी, वाराणसि भी वंद्य घनी।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथगर्भकल्याणकपवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ ज्येष्ठ सुदी बारस तिथि में, जहाँ श्रीसुपार्श्व ने जन्म लिया।
उन जन्मकल्याणक घड़ियों ने, वाराणसि नगरी धन्य किया।।
स्वर्गों में वाद्य स्वयं बाजे, इन्द्रासन भी कम्पा उस क्षण।
उस जन्मभूमि वाराणसि की, अर्चना किया करते सुरगण।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथजन्मकल्याणकपवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वाराणसि के उपवन में ही, जिनवर सुपार्श्व ने दीक्षा ली।
ऋतु परिवर्तन लख हो विरक्त, मोही परिजन को शिक्षा दी।।
वह तिथि भी ज्येष्ठ सुदी बारस, जब दीक्षा स्वयं लिया प्रभु ने।
दीक्षाकल्याणक से पवित्र, नगरी को अर्घ्य दिया मैंने।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

वाराणसि के उद्यान सहेतुक, में शिरीष तरु के नीचे।
फाल्गुन वदि छट्ठ तिथी को केवल-ज्ञान प्राप्त किया जिनवर ने।।
घाती कर्मों का कर विनाश, शुभ समवसरण लक्ष्मी पाया।
मैं इसीलिए वाराणसि तीरथ, की पूजन करने आया।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रवाराणसी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

फिर बाद करोड़ों वर्ष जहाँ, प्रभु पार्श्वनाथ इतिहास चला।
वैशाख कृष्ण दुतिया को गर्भ-कल्याणक उत्सव वहाँ मना।।
पितु अश्वसेन माता वामा के, महलों में सुरगण आये।
उस पावन तीर्थ बनारस को, हम अर्घ्य चढ़ाकर हरषाये।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथगर्भकल्याणकपवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष कृष्ण ग्यारस को, पारसनाथ जहाँ पर जन्मे थे।
मेरूपर्वत की पांडुशिला पर, अभिषव किया था इन्द्रों ने।।
उस जन्मकल्याणक से पावन, नगरी को अर्घ्य चढ़ाऊँ मैं।
वाराणसि तीरथ है प्रसिद्ध, उसकी गुणगाथा गाऊँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथजन्मकल्याणकपवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ ऋषभदेव गुणगाथा सुन, पारसप्रभु को वैराग्य हुआ।
तिथि पौष वदी ग्यारस को प्रभु ने, राजपाट सब त्याग दिया।।
उन बालब्रह्मचारी प्रभु के, चरणों में शीश झुका मेरा।
उनकी दीक्षाभूमी वाराणसि, को है कोटि नमन मेरा।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रवाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जब पार्श्वनाथ भगवान ध्यान में, लीन तपस्या में रत थे।
उपसर्ग किया तब पूर्व जन्म के, बैरी उस कमठासुर ने।।
धरणेंद्र और पद्मावती ने, उपसर्ग प्रभू का दूर किया।।
हुआ केवलज्ञान जहाँ प्रभु को, अहिच्छत्र तीर्थ वह पूज्य हुआ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीपार्श्वनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रअहिच्छत्रतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-

जिनवर सुपार्श्व अरू पार्श्वनाथ के, कल्याणक से पावन जो।
उनके प्राचीन कथानक से, है प्रसिद्ध तीर्थ बनारस वो।।
उस तीरथ से प्रार्थना मेरी, आत्मा भी तीरथ बन जावे।
मैं पूर्ण अर्घ्य अर्पित करता, मुझको अनर्घ्य पद मिल जावे।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथगर्भजन्मादिकल्याणकपवित्रवाराणसि-तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं वाराणसीजन्मभूमिपवित्रीकृत-श्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राभ्यां नमः।

जयमाला

(शंभु छंद)

शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।
प्रभु श्रीसुपार्श्व अरु पार्श्वनाथ की, जन्मभूमि को सदा नमन।।टेक.।।

तीर्थंकर श्री वृषभेश्वर की, आज्ञा से बसी नगरियाँ थीं।
उनमें से ही प्रसिद्ध वाराणसि, आदि कई नगरियाँ थीं।।
यहाँ प्रथम आदि तीर्थंकर के, चलते रहते थे सदा भजन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।1।।

जब-जब स्वर्गों से च्युत होकर, तीर्थंकर यहाँ जनमते थे।
तब-तब धनपति आकर रुचि से, बहुमूल्य रत्न बरसाते थे।।
माता की सेवा करके अष्ट, कुमारी होती थीं प्रसन्न।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।2।।

दो बार हुई पन्द्रह-पन्द्रह, महिने तक यहाँ रतन वर्षा।
सौधर्म इन्द्र इक सहस नेत्र से, प्रभु को देख-देख हर्षा।।
मेरूपर्वत की पाण्डुशिला पर, किया प्रभू का जन्म न्हवन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।3।।

भगवान जहाँ खेले एवं, स्वर्गों का भोजन किया जहाँ।
तीर्थंकर श्रीसुपार्श्व जिन ने, राजा बन राज्य किया था जहाँ।।
युवराज पार्श्व ने दीक्षा ली, स्वयमेव बालब्रह्मचारी बन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वंदन।।4।।

सम्मेदशिखर से मोक्ष गये, पारस सुपार्श्व द्वय तीर्थंकर।
उपसर्ग हुआ अहिछत्र में, केवलज्ञान लहा पारस जिनवर।।
तीर्थंकर प्रभु की पदरज से, धरती बन जाती नन्दनवन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वन्दन।।5।।

है वर्तमान में वाराणसि का, क्षेत्र भदैनी सुखकारी।
वह प्रभु सुपार्श्व की जन्मभूमि, मानी जाती मंगलकारी।।

भेलूपुर पारसनाथ जिनेश्वर, का कहलाता जन्मस्थल।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वंदन।।6।।
यह अर्घ्यथाल स्वीकार करो, आठों द्रव्यों से युक्त मेरा।
यह शब्दमाल स्वीकार करो, गुणवर्णन से संयुक्त मेरा।।
यह भक्तिमाल स्वीकार करो, भावों से मैं करता अर्चन।
शुभ तीर्थराज वाराणसि को, मेरा है कोटि-कोटि वंदन।।7।।

–दोहा–

जन्मभूमि वाराणसी, है जग में सुप्रसिद्ध।
नमन ''चन्दनामती'' सदा, पूजन का है लक्ष्य।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीसुपार्श्वनाथपार्श्वनाथजन्मभूमिवाराणसीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छन्द-

जो भव्य प्राणी पार्श्वप्रभु की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चंदना'' वे आएंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

भगवान श्री पार्श्वनाथ की आरती

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–करती हूं तुम्हारी पूजा.....

करते हैं प्रभू की आरति, मन का दीप जलेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।
जय पारस देवा, जय पारस देवा-2।।टेक.।।

हे अश्वसेन के नन्दन, वामा माता के प्यारे।
तेईसवें तीर्थंकर पारस, प्रभु तुम जग से न्यारे।।
तेरी भक्ती गंगा में जो स्नान करेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।जय पारस देवा-4।।1।।

वाराणसि में जन्में, निर्वाण शिखरजी से पाया।
इक लोहा भी प्रभु चरणों में, सोना बनने आया।।
सोना ही क्या वह लोहा, पारसनाथ बनेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।।जय पारस देवा-4।।2।।

सुनते हैं जग में वैर सदा, दो तरफा चलता है।
पर पार्श्वनाथ का जीवन, इसे चुनौती करता है।।
इक तरफा वैरी ही कब तक, उपसर्ग करेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।जय पारस देवा-4।।3।।

कमठासुर ने बहुतेक भवों में, आ उपसर्ग किया।
पारसप्रभु ने सब सहकर, केवलपद को प्राप्त किया।।
कैवल्य ज्योति से पापों का, अंधेर मिटेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।जय पारस देवा-4।।4।।

प्रभु तेरी आरति से मैं भी, यह शक्ती पा जाऊं।
''चंदनामती'' तव गुणमणि की, माला यदि पा जाऊं।
तब जग में नहिं शत्रू का, मुझ पर वार चलेगा।
पारस प्रभु की भक्ती से, मन संक्लेश धुलेगा।जय पारस देवा-4।।5।।

वाराणसी तीर्थ की आरती

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

तर्ज–आओ बच्चों.....

चलो सभी मिल करें आरती, वाराणसि शुभ धाम की।
श्री सुपार्श्व अरु पार्श्वनाथ के, जन्मकल्याण स्थान की।।
जय जय पार्श्व जिनं, प्रभो सुपार्श्व जिनं।।टेक.।।

काशी नाम से जानी जाती, वाराणसि यह प्यारी है।
इन्द्र ने जिसे सजाया कर दी, रत्नों की उजियारी है।।
वर्णन जिसका अगम-अकथ है, महिमा जन्मस्थान की।।श्री.।।जय.।।1।।

श्री सुपार्श्व तीर्थंकर प्रभु के, चार यहाँ कल्याण हुए।
पृथ्वीषेणा के संग राजा, सुप्रतिष्ठ भी धन्य हुए।।
श्री सम्मेदशिखर गिरि है उन, प्रभुवर का शिवधाम जी।।श्री.।।जय.।।2।।

पुनः इसी पावन भूमी पर, पारसप्रभु ने जन्म लिया।
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा माँ को धन्य किया।
यहीं अश्ववन में दीक्षा ले, चले राह शिवधाम की।।श्री.।।जय.।।3।।

अहिच्छत्र में ज्ञान मिला, सम्मेदशिखर निर्वाण हुआ।
बाल ब्रह्मचारी पारस प्रभु, का हम सबने ध्यान किया।।
सांवरिया मनहारी प्रभु की, महिमा अपरम्पार जी।।श्री.।।जय.।।4।।

प्रभु तुम सम पद पाने हेतू, इस तीरथ को सदा नमूँ।
वाराणसि नगरी की माटी, शीश चढ़ा प्रभु पद प्रणमूँ।।
भाव यही''चंदनामती'', हर आत्मा बने महान भी।।श्री.।।जय.।।5।।
हुई स्वयंवर प्रथा यहाँ से, ही प्रारंभ कहा जाता।
पद्म नाम के चक्रवर्ति का, जन्म यहीं माना जाता।।
भरे कई इतिहास हृदय में, अतिशययुक्त महान भी।।श्री.।।जय.।।6।।

समन्तभद्राचार्य गुरू की, भस्मक व्याधी शांत हुई।
चन्द्रप्रभू की प्रतिमा प्रगटी, जैनधर्म की क्रान्ति हुई।।
विद्या का यह केन्द्र बनारस, जग में ख्यातीमान भी।।श्री.।।जय.।।7।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

धरती का तुम्हें नमन है, आकाश का तुम्हें नमन है।
तीन लोक के सौ इन्द्रों ने, किया तुम्हें वंदन है।।
सौ-सौ बार नमन है-2
पार्श्वनाथ प्रभु के चरणों में, सौ-सौ बार नमन है।।टेक.।।

तीन तीर्थ माने हैं जिनके, पंचकल्याण से पावन,
वाराणसि, अहिच्छत्र और सम्मेदशिखर मनभावन।
इनके दर्शन से भक्तों के, पावन होते मन हैं,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।1।।

वर्तमान में पार्श्वनाथ का, अतिशय खूब बखाना,
अंतरिक्ष, शिरपुर, चंवलेश्वर, मक्सी, अडिन्दा जाना।
अतिशायी कचनेर में जाकर, करो प्रभू दर्शन है,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।2।।

कर्नाटक के बीजापुर में, सहस्रफणा पारस हैं,
जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में, चिन्तामणि पारस हैं।
भारत के अनेक नगरों में, पारस प्रभु मंदिर हैं,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।3।।

गणिनी ज्ञानमती माता, कहती हैं सब भक्तों को,
पारस प्रभु के अतिशय से, परिचित करवाओ सबको।
सभी ''चन्दनामती'' हमेशा, उत्सव करो सफल है,
सौ-सौ बार नमन है, पार्श्वनाथ प्रभु.....।।4।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

नाम तिहारा तारनहारा कब तेरा दर्शन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।। टेक.।।

जाने कितनी माताओं ने, कितने सुत जन्में हैं।
पर इस वसुधा पर तेरे सम, कोई नहीं बने हैं।।
पूर्व दिशा में सूर्य देव सम, सदा तेरा सुमिरन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।1।।

पृथ्वी के सुन्दर परमाणू, सब तुझमें ही समा गए।
केवल उतने ही अणु मिलकर, तेरी रचना बना गए।।
इसीलिए तुझ सम सुन्दर नहिं, कोई नर सुन्दर होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।2।।

मन में तव सुमिरन करने से, पाप सभी नश जाते हैं।
यदि प्रत्यक्ष करें तव दर्शन, मनवांछित फल पाते हैं।।
आज ''चंदनामती'' प्रभू का, अनुपम गुण कीर्तन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-देख तेरे संसार.....

विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा बनी है आलीशान,
जय जय ऋषभदेव भगवान
मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र में,
पर्वत के पाषाण खण्ड में।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती माता की प्रेरणा महान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।1।।
इक सौ अठ फुट की यह प्रतिमा।
जिनशासन की अद्भुत गरिमा।।
यह आश्चर्य प्रथम है जग में जैनधरम की शान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।2।।
शांति सिंधु आचार्यप्रवर की
परम्परा में सप्तम पीढ़ी।।
अनेकांतसागराचार्य का खिला है पुण्य महान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।3।।
दश आचार्य का हुआ पदार्पण।
संत शताधिक प्रभु लघु नंदन।।
इक सौ पच्चीस साधु-साध्वी का बन गया कीर्तीमान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।4।।
यह है आयडॅल ऑफ अहिंसा।
भारत की पहचान अहिंसा।।
इसे ''चन्दनामती'' हृदय से कर लो सभी प्रणाम,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।5।।
श्री रवीन्द्रकीर्ति का समर्पण।
भक्तों का अर्थाञ्जलि अर्पण।।
अमर रहेगा युग युग तक सबका तन मन धन दान,
जय जय ऋषभदेव भगवान।।6।।